

ॐ श्री गुरु अक्कमहादेवी लिंगाय नमः ॥



योगांग त्रिविधि

अक्कमहादेवी द्वारा रचित

अर्थ एवं व्याख्या

श्रमरांभा, बी. आर.

ॐ श्री गुरु अक्कमहादेवी लिंगाय नमः 

विश्व की प्रथम महिला जगद्गुरु कवयित्री

विश्वगुरु, वैराग्यनिधि, जगज्योति,

जगन्माता, महाऋषि, परमहंसे,

वीर वैरागिणी, अक्कमहादेवी,

महादेवी अक्का —

अक्कमहादेवी द्वारा रचित

“योगांग त्रिविधि”

अर्थ एवं व्याख्या

भ्रमरांभा, बी. आर.

Stanza 1

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

श्री महामहिमने | सोमशेखर गुरुवे

कामितद फलव कोडु कंडा | एन्न ह-

द्धामदोळु नितु मरे कंडा || 1 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

श्री महामहिमने सोमशेखर गुरुवे: हे परम महिमामय, मस्तक पर चंद्रमा को धारण करने वाले (सोमशेखर) शिव-स्वरूप सद्गुरु!

कामितद फलव कोडु कंडा: मेरी सभी पवित्र एवं सात्विक मनोकामनाओं का फल मुझे प्रदान कीजिए।

एन्न हद्धामदोळु नितु मरे कंडा: मेरे हृदय रूपी मंदिर में सदा विराजमान रहकर मेरा मार्गदर्शन कीजिए।

व्याख्या: यह मंगलाचरण का प्रथम पद है। अक्क महादेवी जी अपने सद्गुरु और इष्टदेव शिव की स्तुति करते हुए प्रार्थना करती हैं कि वे उनके हृदय-कमल में सदा निवास करें और उनकी आध्यात्मिक साधना को सफल बनाकर मनोवांछित मुक्ति का फल प्रदान करें।

Stanza 2

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

मोदलु माडुवे नानु | सदमल गुरुविन

मृदुपादगळनु बलगोंडु | तत्त्वद

चजुर पदगळनु मुददिंद || 2 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

मोदलु माडुवे नानु सदमल गुरुविनः सबसे पहले मैं अपने निर्मल, निष्पाप सद्गुरु के...

मृदुपादगळनु बलगोंडुः ...कोमल चरणों की वंदना और परिक्रमा (प्रदक्षिणा) करती हूँ।

तत्त्वद चजुर पदगळनु मुददिंदः और इसी गुरु-कृपा के बल पर परम तत्त्व के ज्ञानपूर्ण एवं चतुर पदों की रचना आनंदपूर्वक करती हूँ।

व्याख्या: साधना पथ पर गुरु-वंदना को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। अक्क महादेवी जी मानती हैं कि गुरु के पवित्र चरणों का आश्रय लिए बिना परम तत्त्व (ब्रह्म-ज्ञान) को प्रकट करना संभव नहीं है। वे गुरु के आशीर्वाद से ही इस आध्यात्मिक काव्य की रचना का संकल्प लेती हैं।

Stanza 3

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

जीव - परमरे भेद | भाववनरिवोडे

आवाव मुखदोळिरुवुरु | येन्नय

भावक्के बंदुदनोरेवे || 3 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

जीव - परमरे भेद भाववनरिवोडे: जीवात्मा और परमात्मा के बीच के भेद तथा संबंध को समझने के लिए...

आवाव मुखदोळिरुवुरु: ...यह ज्ञान किस-किस रूप में अभिव्यक्त होता है...

येन्नय भावक्के बंदुदनोरेवे: ...मेरी अंतरात्मा और अनुभूति में जैसा प्रकट हुआ है, उसे मैं सरलता से कहूँगी।

व्याख्या: अक्क महादेवी जी यहाँ स्पष्ट करती हैं कि वे कोई शुष्क किताबी या केवल शास्त्र आधारित ज्ञान नहीं दे रही हैं। जीवात्मा (जीव) और परमात्मा (परम) के बीच के गूढ़ संबंध को उन्होंने अपनी आध्यात्मिक अनुभूति (अनुभाव) में जैसा अनुभव किया है, उसी व्यावहारिक एवं प्रत्यक्ष ज्ञान को वे इस ग्रन्थ में व्यक्त कर रही हैं।

Stanza 4

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

शरणरे नेलेगळनरिवडेन्न अळवे

हरियज सुररिगळवल्ल | देंदेन-

लोरेवे नानवर कृपेयिंद || 4 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

शरणरे नेलेगळनरिवडेन्न अळवे: शिवशरणों (सिद्ध पुरुषों) की उच्च आध्यात्मिक स्थिति और महिमा को जानना क्या मेरी क्षमता में है?

हरियज सुररिगळवल्ल देंदेन: जब विष्णु (हरि), ब्रह्मा (अज) और अन्य देवता भी उनकी महिमा को पूरी तरह नहीं जान पाते...

लोरेवे नानवर कृपेयिंद: ...तो फिर मैं तो अत्यंत तुच्छ हूँ, केवल उन शरणों की असीम कृपा से ही कुछ कहने का साहस कर रही हूँ।

व्याख्या: यहाँ भक्त की परम विनम्रता दिखाई देती है। सिद्ध शिवशरणों की आध्यात्मिक स्थिति इतनी ऊँची होती है कि त्रिदेव और देवता भी उसे पूर्णतः नहीं समझ सकते। अक्क महादेवी जी कहती हैं कि यदि वे उनके बारे में कुछ कह पा रही हैं, तो यह केवल उन शिवशरणों की अहैतुकी कृपा का ही परिणाम है।

Stanza 5

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

एल्ल देवर देव | वल्लभने गुरु चेन्न-

मल्लिकार्जुनने मनदोळु | इरु कंडा

बल्लंते निम्म स्तुतिसुवेनु || 5 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

एल्ल देवर देव वल्लभने: हे देवों के देव! हे समस्त प्राणियों के प्रियतम प्रभु!

गुरु चेन्नमल्लिकार्जुनने मनदोळु इरु कंडा: हे मेरे गुरु चेन्नमल्लीकार्जुन! आप सदा मेरे मन में निवास कीजिए।

बल्लंते निम्म स्तुतिसुवेनु: मेरी जितनी अल्प समझ और क्षमता है, मैं उसी अनुसार आपकी स्तुति करूँगी।

व्याख्या: अक्क महादेवी जी अपने इष्टदेव चेन्नमल्लीकार्जुन को ही सर्वोच्च सद्गुरु मानती हैं। वे ईश्वर से प्रार्थना करती हैं कि वे उनके मन में सदा विराजें, ताकि वे अपनी सामर्थ्य के अनुसार बिना किसी अहंकार के प्रभु की महिमा का गुणगान कर सकें।

Stanza 6

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

आरु भूतांगळल्लि आरु तत्त्वगळल्लि

पूरै सियिर्प घनवन्नु | मनदल्लि

आरैदु तिळिदडव मुक्त || 6 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

आरु भूतांगळल्लि आरु तत्त्वगळल्लि: छः तत्त्वों और छः चक्रों/शरीरों में...

पूरै सियिर्प धनवन्नः ...जो परम चैतन्य (परब्रह्म) परिपूर्ण रूप से व्याप्त है...

मनदल्लि आरैदु तिळिदडव मुक्तः ...जो साधक अपने मन के भीतर खोजकर उस तत्त्व को जान लेता है, वही वास्तव में मुक्त (जीवन्मुक्त) है।

व्याख्या: यह पद योग और वेदांत के सार को प्रकट करता है। हमारे शरीर के छह चक्रों (षट्चक्र) और तत्त्वों के भीतर जो एक ही अखंड चैतन्य परमात्मा विद्यमान है, उसे बाहर खोजने के बजाय जो साधक अंतर्मुखी होकर अपने भीतर साक्षात् कर लेता है, वही संसार के बंधनों से मुक्त हो जाता है।

Stanza 7

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

माघमासवू मोगी मेगे बंदितु चैत्र

बेग मामरनु तळिरितु | अद कंडु

कूगि करेदितु कळकंठ || 7 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अनुवाद:

माघमासवू मोगी मेगे बंदितु चैत्र: माघ का महीना (शिशिर/शीत ऋतु) बीत गया और वसंत का चैत्र महीना आ गया...

बेग मामरनु तळिरितु: ...आम के वृक्ष पर शीघ्र ही नई कोपलें और मौर (बौर) छा गए...

अद कंडु कूगि करेदितु कळकंठ: ...उसे देखकर कोकिल (कोयल) मधुर स्वर में कुहू-कुहू गाकर पुकारने लगी!

व्याख्या (प्रतीकात्मक अर्थ): यह पद आध्यात्मिक जागृति का एक सुंदर प्रतीक (Allegory) है। माघ मास अज्ञान और अज्ञानता की शीतलता का प्रतीक है, जबकि चैत्र मास ज्ञान और भक्ति के वसंत का प्रतीक है। जब गुरु-कृपा से साधक के भीतर भक्ति रूपी वसंत आता है, तो उसका अंतःकरण आम के वृक्ष की तरह पल्लवित हो उठता है और आत्मा रूपी कोयल आनंद में प्रभु का नाम पुकारने लगती है।

Stanza 8

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

आकाशदोळगण जो बिकेय प्रभे बंदु

लोकंगळोळगे मुसुकलु | अद कंडु

एकांगियाडडव योगी || 8 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

आकाशदोळगण जो बिकेय प्रभे बंदु: चिदाकाश (आंतरिक आकाश/सहस्रार) की अलौकिक दिव्य ज्योति जब प्रकट होती है...

लोकंगळोळगे मुसुकलु: ...और समस्त लोकों तथा अंतःकरण को अपनी असीम रोशनी से ढंक लेती है...

अद कंडु एकांगियाडडव योगी: ...उस परम प्रकाश का साक्षात्कार करके जो पूर्णतः एकाग्र और अनन्य हो जाता है, वही सच्चा योगी है।

व्याख्या: कुंडलिनी जागरण और ध्यान की उच्च अवस्था का वर्णन है। जब योग साधना में ब्रह्मरंध्र (चिदाकाश) में परम प्रकाश (दिव्य ज्योति) उदित होता है, तो बाहरी जगत का भान समाप्त हो जाता है। जो साधक इस आंतरिक दिव्य प्रकाश में लीन होकर सांसारिक द्वैत से परे हो जाता है, वही वास्तविक योगी कहलाता है।

Stanza 9

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

ओंबत्तु वेज्जद तुंबिद कोडनोळु

संभ्रमद मुत्तु इरुतिहुदु | अडरनुव

नंMulti कंडवने कडु जाणि || 9 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ)

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

ओंबत्तु वेज्जद तुंबिद कोडनोळु: नौ छिद्रों (नौ द्वारों) वाले इस भरे हुए मानव शरीर
रूपी घड़े में...

संभ्रमद मुत्तु इरुतिहुदु: ...एक अत्यंत अलौकिक, अमूल्य मोती (आत्मा/चैतन्य)
विद्यमान है...

अडरनुव नंबि कंडवने कडु जाणि: ...गुरु के उपदेश पर विश्वास करके जो इस गुप्त
मोती को अपने भीतर देख लेता है, वही अत्यंत बुद्धिमान और ज्ञानी है।

व्याख्या: यह संध्या भाषा (अपरिहार्य प्रतीकात्मक शैली) का पद है। नौ छिद्रों वाला घड़ा
यानी हमारा नौ द्वारों वाला भौतिक शरीर (दो आँखें, दो कान, दो नासिका छिद्र, मुख और
दो मल-मूत्र द्वार)। इस नख्खर शरीर के भीतर 'आत्म-रत्न' या चैतन्य रूपी मोती छिपा है।
जो साधक इस रहस्य को समझकर अपने भीतर उस रत्न का दर्शन कर लेता है, वही सच्चा
ज्ञानी है।

Stanza 10

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

अष्टदळ कमळद | बट्टबयलोळगोंदु

मुट्टबारद घनविहुदु | मनदोळगे

दृष्टियिट्टवने कडुजाणि || 10 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

अष्टदल कमलद बट्टबयलोलगोंदुः आठ पंखुडियों वाले हृदय-कमल के विस्तृत शून्य (चिदाकाश) में...

मुट्टबारद घनविहुदुः ...एक स्पर्श से परे, अत्यंत महान और निराकार परब्रह्म विद्यमान है...

मनदोळगे दृष्टियिट्टवने कडुजाणिः ...अपने मन को एकाग्र करके जो आंतरिक दृष्टि से उसका ध्यान करता है, वही परम चतुर एवं ज्ञानी साधक है।

व्याख्या: अष्टदल कमल हमारे 'अनाहत चक्र' (हृदय चक्र) का प्रतीक है। उस अष्टदल कमल के भीतर जो विस्तृत शून्य (बट्टबयल/शून्य आकाश) है, उसमें निराकार परम शिव (घन) विराजमान हैं, जिन्हें चर्मचक्षुओं या स्पर्श से नहीं जाना जा सकता। जो अपनी ध्यान दृष्टि को अंतर्मुखी करके उस निराकार ब्रह्म का साक्षात्कार करता है, वही सच्चा ज्ञानी है।

Stanza 11

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

कोडगनोडगूडी | याडुव नरि नायि

बीडाद मनेय मुरिदिहेनु | मत्तोंदु

गूडिनोळु नानु मेरेदिहेनु || 11 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

कोडगनोडगूडी याडुव नरि नायि: बंदर (चंचल मन), लोमड़ी (छल-कपट/माया) और कुत्ते (इंद्रिय सुख/वासना) के साथ क्रीड़ा करने वाली...

बीडाद मनेय मुरिदिहेनु: ...इस नश्वर शरीर रूपी घर को मैंने तोड़ डाला है...

मत्तोंदु गूडिनोळु नानु मेरेदिहेतु: ...और अब मैं एक दूसरे ही दिव्य धाम
(आध्यात्मिक चिदाकाश) में निवास कर पूर्ण शोभा पा रही हूँ।

व्याख्या: यह पद प्रतीकात्मक (संध्या भाषा) शैली में है। बंदर चंचल मन का, लोमड़ी माया-
चतुराई की और कुत्ता विषय-वासनाओं का प्रतीक है। अक्क महादेवी जी कहती हैं कि उन्होंने
चंचलता और वासनाओं से भरे इस भौतिक शरीर और सांसारिक तादात्म्य को नष्ट कर
दिया है और अब सहस्रार/चिदाकाश रूपी परम दिव्य स्थान में लीन हो गई हैं।

Stanza 12

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

ओडहुट्टिदैवर | ओडने शिरगळनरिदु

मडदिय करव हिडिदिहेतु | मुंदण

नडुबट्टेयोळगे नडेदिहेतु || 12 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

ओडहुट्टिदैवर ओडने शिरगळनरिदु: साथ जन्म लेने वाले पाँच भाइयों
(पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ / पंचकोश / काम-क्रोध आदि पंचविकार) के सिर काटकर...

मडदिय करव हिडिदिहेतु: ...ज्ञान रूपी दुल्हन का हाथ थाम लिया है...

मुंदण नडुबट्टेयोळगे नडेदिहेतु: ...और सामने दिख रहे उस सीधे मध्य मार्ग (सुषुम्णा
नाड़ी / भक्ति का सीधा रास्ता) पर आगे बढ़ चली हूँ।

व्याख्या: 'पाँच भाई' शरीर के साथ उत्पन्न होने वाले पाँच विकार या ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। उनके
अहंकार और नियंत्रण को नष्ट करके साधना में 'आत्म-ज्ञान' या 'अनन्य भक्ति' रूपी दुल्हन
को स्वीकार किया जाता है। इसके पश्चात् साधक इडा और पिंगला के द्वैत को छोड़कर सीधे
मध्य मार्ग यानी सुषुम्णा नाड़ी (नडुबट्टे) पर मोक्ष की ओर अग्रसर होता है।

Stanza 13

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

नुडियबारदु हण्णु कडेयोळगिरलागि

मडदि तानोर्वळद कण्डु ग्रहिसल्के |

नुडियोळगागि मेरेयित्तु || 13 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

नुडियबारदु हण्णु कडेयोळगिरलागि: वाणी और शब्दों से परे का परम फल
(आत्मानंद) जब भीतर सुलभ हो जाए...

मडदि तानोर्वळद कण्डु ग्रहिसल्के: ...तो बुद्धि/आत्मा रूपी स्त्री जब उस फल को
देख कर ग्रहण करती है...

नुडियोळगागि मेरेयित्तु: ...तब वह अनुभव सारे वचनों और वाणी में अनुपम दिव्य
प्रकाश बनकर चमक उठता है।

व्याख्या: आत्म-साक्षात्कार रूपी फल किसी बाहरी शब्द या भाषण का विषय नहीं है, वह
अनिर्वचनीय है। जब साधक की निर्मल बुद्धि (मडदि) अंतर्मुखी होकर उस आंतरिक आत्म-
रस को ग्रहण करती है, तो उसकी पूरी वाणी और अभिव्यक्ति दिव्य चैतन्य से सुशोभित हो
जाती है।

Stanza 14

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

कंगळ नोटदि करगितेन्नय मनवू

तिंगळ सूडिदभवने | नीनीग

हिंगदलेनगे दयावागो || 14 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

कंगळ नोटदि करगितेन्नय मनवू: हे प्रभु! आपकी केवल एक करुणाभरी दृष्टि पड़ते ही मेरा मन मोम की तरह पिघल गया!

तिंगळ सूडिदभवने: हे मस्तक पर चंद्रकला धारण करने वाले अजन्मा भगवान शिव!

नीनीग हिंगदलेनगे दयावागो: ...अब आप मुझसे ज़रा भी दूर न होकर मुझ पर सदा अपनी कृपा बनाए रखिए।

व्याख्या: यह शुद्ध भक्ति रस का पद है। अक्क महादेवी जी कहती हैं कि भगवान शिव की एक दिव्य दृष्टि (कटाक्ष) से ही उनका सांसारिक मन विलीन होकर पिघल गया। वे चंद्रमौलेश्वर शिव से प्रार्थना करती हैं कि वे कभी उनसे अलग न हों और अपनी करुणा का प्रवाह सदा बनाए रखें।

Stanza 15

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

नूरेंदु मणिगळ | मूरु भागव माडि

मूरु पुरुषरिगे अळवडिसि | मूरवरनु

सेरि नानळिदु बयलादे || 15 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

तूरेण्डु मणिगळ मूरु भागव माडि: १०८ मनकों (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति आदि १०८ नाडियों/वृत्तियों) के तीन भाग करके...

मूरु पुरुषरिगे अळवडिसि: ...उन्हें तीन पुरुषों (गुरु, लिंग, जंगम अथवा त्रिगुण/त्रिदेवता तत्त्वों) को अर्पित कर दिया...

मूरवरनु सेरि नानळिदु बयलादे: ...और उन तीनों के साथ एकाकार होकर मैं स्वयं को मिटाकर परम शून्य (बयलु/परब्रह्म) हो गई।

व्याख्या: १०८ मणियाँ शरीर की नाडियों, सांसों या वृत्तियों का प्रतीक हैं। साधक अपनी सम्पूर्ण सत्ता (स्थूल, सूक्ष्म, कारण शरीर) को गुरु, लिंग और जंगम में विभाजित कर समर्पित कर देता है। इस त्रिविध समर्पण से साधक का अपना अहंकार मिट जाता है और वह अंतिम अवस्था बयलु (असीम निराकार ब्रह्म) में विलीन हो जाता है।

Stanza 16

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

ओंदु रत्नवु तानु मुं दे ईरारागि

कुंददैवत्तु तेरनाद | रत्नवुदु

संदितु एन्न मनदोळु || 16 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

ओंदु रत्नवु तानु मुं दे ईरारागि: वह एक ही मूल आत्म-रत्न आगे चलकर १२ नाडियों/कलाओं (ईरारु = १२) के रूप में प्रस्फुटित हुआ...

कुंददैवत्तु तेरनाद रत्नवुदु: ...और फिर बिना किसी कमी के ५० मातृका वर्णों (५० अक्षरों/वृत्तियों) का रूप ले लिया...

संदितु एन्न मनदोळु: ...वह परम अलौकिक रत्न अब मेरे मन में पूरी तरह समा गया है।

व्याख्या: यह तंत्र और योग का दार्शनिक निरूपण है। एक ही मूल परब्रह्म रूपी रत्न १२ कलाओं और संस्कृत के ५० मातृका वर्णों (जो विभिन्न चक्रों की पंखुड़ियों के अक्षर हैं) के रूप में इस सृष्टि और शरीर में अभिव्यक्त होता है। अकाल महादेवी जी कहती हैं कि इस अनेकता के पीछे छिपे उसी एक मूल रत्न का साक्षात्कार उनके मन में हो गया है।

•

Stanza 17

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

ऊरोळगे आडुव | मारिय हिडितंदु

भारिकोळवनळवडिसि | आ पुर

मारिदेनू | ओब्ब चदुरंगे || 17 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

ऊरोळगे आडुव मारिय हिडितंदु: इस शरीर रूपी नगर में उत्पात मचाने वाली महामारी/अहंकार रूपी 'मारी' (दुष्ट वासना) को पकड़ कर...

भारिकोळवनळवडिसि: ...उसे दृढ़ ज्ञान और वैराग्य की भारी बेड़ियों (जंजीरों) में जकड़ दिया...

आ पुर मारिदेनू ओब्ब चदुरंगे: ...और उस पूरे नगर (शरीर) को एक परम चतुर स्वामी (सद्गुरु/शिव) को बेच (समर्पित कर) दिया!

व्याख्या: शरीर रूपी नगर में चंचल वासनाएँ और अहंकार महामारी (मारी) की तरह तबाही मचाते हैं। योग साधना द्वारा वैराग्य की बेड़ी लगाकर इस वासना को वश में किया जाता है। इसके बाद साधक अपने इस पूरे शरीर-रूपी नगर को ही सद्गुरु रूपी परम चतुर पुरुष के हाथों सौंप देता है।

Stanza 18

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

कोटि रविशशिगळिगे मीटिद प्रभे बंदु

नाटितु एन्न मनदोळगे | अद कंडु

दाटिदेनू भवद कुणिगळनु || 18 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

कोटि रविशशिगळिगे मीटिद प्रभे बंदु: करोड़ों सूर्य और चंद्रमाओं की संयुक्त चमक को भी पीछे छोड़ने वाला परम प्रकाश...

नाटितु एन्न मनदोळगे: ...अचानक मेरे मन के भीतर गहराई तक अंकित हो गया!

अद कंडु दाटिदेनू भवद कुणिगळनु: ...उस अलौकिक ज्योति का दर्शन करके मैं संसार रूपी सभी गड्ढों और बंधनों को पार कर गई।

व्याख्या: यह कुंडलिनी जागरण के समय सहस्रार में होने वाले परम प्रकाश के अनुभव का वर्णन है। वह प्रकाश कोटि सूर्यों से भी अधिक तेजोमय है। उस आंतरिक ज्योति का साक्षात्कार होते ही जन्म-मरण और संसार के सभी दुःख-रूपी गड्ढे स्वतः पार हो जाते हैं।

Stanza 19

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

अंबरादोळगण | तुंबिद कोडनुक्कि

कुंभिनिय मेले सुरियलु | मानवरु

सांबलोक तेरळिदरु || 19 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

अंबरादोळगण तुंबिद कोडनुक्कि: सहस्रार (आंतरिक चिदाकाश) में स्थित अमृतरस से भरा हुआ कलश जब छलक उठा...

कुंभिनिय मेले सुरियलु: ...और वह अमृतधारा शरीर रूपी पृथ्वी पर बहने लगी...

मानवरु सांबलोक तेरळिदरु: ...तो उसे पान करके साधारण मनुष्य भी शिवलोक (सांबलोक/परम पद) को प्राप्त हो गए!

व्याख्या: सहस्रार चक्र से बहने वाले सोमरस या अमृत (अमृतामृत) का निरूपण है। जब योग साधना में सहस्रार का अमृत कलश छलककर पूरे शरीर की नाड़ियों में प्रवाहित होता है, तो साधक का मर्त्य भाव समाप्त हो जाता है और वह सीधे शिव-लोक (परम चैतन्य) में प्रवेश कर जाता है।

Stanza 20

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

मोरेव नादव केळि उरिव ज्योतिय नोडि

सुरिवमृतवनु सविदुंड | कारण

तोरेदनो जनन मरणगळनु || 20 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

मोरेव नादव केळि: गूंजते हुए अनाहत नाद (ओंकार ध्वनि) को सुनकर...

उरिव ज्योतिय नोडि: ...प्रज्वलित होती हुई आंतरिक दिव्य ज्योति का दर्शन करके...

सुरिवमृतवनु सविदुंड कारण: ...और टपकते हुए अमृत रस का आस्वादन करने के कारण...

तोरेदनो जनन मरणगळनु: ...मैंने जन्म और मृत्यु के चक्र को सदा-सदा के लिए त्याग दिया!

व्याख्या: यह पद आंतरिक योग साधना के तीन मुख्य लक्षणों को समेटता है:

अनाहत नाद (आंतरिक दिव्य संगीत सुनना)

आत्म-ज्योति (सहस्रार/भूमध्य में प्रकाश देखना)

अमृत पान (सहस्रार से टपकते रस का स्वाद लेना)

जब साधक इन तीनों का एक साथ अनुभव कर लेता है, तो उसके जन्म और मरण का चक्र सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

Stanza 21

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

अष्टदिक्कलि शक्ति | अष्टरुद्रर मूर्ति

अष्टदिक्पालारादिगळ | नडुविर्द

कट्टाणि मुत्त बरसेळेदे || 21 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

अष्टदिक्कलि शक्ति अष्टरुद्र मूर्ति: आठों दिशाओं में फैली शक्तियाँ, आठों रुद्रों की मूर्तियाँ...

अष्टदिक्पालारादिगळ नडुविर्द: ...तथा अष्टदिक्पालों (दसों दिशाओं के रक्षकों) के बीच में स्थित...

कट्टाणि मुत्त बरसेळेदे: ...उस अनमोल निष्कलंक 'श्रेष्ठ मोती' (आत्मा/चैतन्य) को मैंने खींचकर अपने भीतर खींच लिया!

व्याख्या: यह पद आंतरिक योग का निरूपण करता है। आठों दिशाओं और शक्तियों के मध्य में जो विशुद्ध चैतन्य रूपी आत्मा स्थित है, साधक उसे बहिर्मुखी वृत्तियों से समेटकर अंतर्मुखी करके अपने हृदय-कमल में खींच लेता है।

Stanza 22

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

ओंबत्तु वेज्जद | अंबुगळ बलिवुत्त

तुंबि सुषुम्मेयोळु घनव | नोडल्के

कुंभदोळमृत सुरियित्तु || 22 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

ओंबत्तु वेज्जद अंबुगळ बलिवुत्त: नौ छिद्रों वाले शरीर के बाहरी द्वारों को बंद कर...

तुंवि सुषुम्मेयोळु घनव नोडल्के: ...प्राणवायु को सुषुम्णा नाडी में भरकर जब परम तत्व (घन) का साक्षात्कार किया...

कुंभदोळमृत सुरियितु: ...तब सहस्रार रूपी कलश से अमृत धारा बहने लगी!

व्याख्या: जब योग साधना द्वारा नौ द्वारों (नवद्वारों) से मन को हटाकर प्राण को सुषुम्णा नाडी में प्रवाहित किया जाता है, तब साधक को आंतरिक ब्रह्म का दर्शन होता है और सहस्रार से अमृत की वर्षा होने लगती है।

Stanza 23

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

आरु मुखद मुत्तु | नीरोळगिरिसल्के

नीरळिदु मुत्तु उळियितु | आ मुत्तु

सेरिसिदेन्नेन्न उरदल्लि || 23 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

आरु मुखद मुत्तु नीरोळगिरिसल्के: छह मुखों वाले मोती (षट्चक्रों के आत्म-तत्व) को जब जल (विषय-वासना) में रखा गया...

नीरळिदु मुत्तु उळियितु: ...तो जल सूख गया और केवल शुद्ध मोती ही शेष रहा...

आ मुत्तु सेरिसिदेन्नेन्न उरदल्लि: ...उस अनमोल मोती को मैंने अपने हृदय में स्थापित कर लिया।

व्याख्या: षट्चक्रों को पार करने पर जो आत्म-रत्न प्राप्त होता है, उसे जब संसार रूपी जल में परखा जाता है, तो सांसारिक वासना रूपी जल सूख जाता है और केवल अमर आत्मा शेष रहती है। साधक उसे अपने हृदय में सदा के लिए धारण कर लेता है।

Stanza 24

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

उप्पर गुडि मेले सर्पनु हेडेयत्ति

एप्पत्तु पुरवनगिदुंडु | दणियदे

कप्पेय शिरव मुरियित्तु || 24 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

उप्पर गुडि मेले सर्पनु हेडेयत्ति: मस्तक (सहस्रार) के शिखर पर कुंडलिनी रूपी सर्प ने अपना फन उठाया...

एप्पत्तु पुरवनगिदुंडु दणियदे: ...और बहत्तर हजार नाड़ियों (७२,००० नाड़ियों) के बंधनों को निगलकर भी न तृप्त होकर...

कप्पेय शिरव मुरियित्तु: ...चंचल मन रूपी मेंढक के सिर को मरोड़कर नष्ट कर दिया!

व्याख्या: यह संध्या भाषा (सांकेतिक भाषा) का गूढ़ पद है। जागृत कुंडलिनी नागिन सहस्रार में फन उठाती है और शरीर की ७२,००० नाड़ियों के विकारों को भस्म कर देती है। अंत में वह चंचल मन रूपी मेंढक का भी अंत कर देती है।

Stanza 25

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

हिल्ल बागिल तेरदु सत्तातन एच्चरिसि

हेतम्मन करेव पिडियल्ले | अवळीग

इत्तळै तन्न पदकव || 25 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

हिल्ल बागिल तेरदु सत्तातन एच्चरिसि: पीछे का दरवाजा (सुषुम्णा का गुप्त मार्ग) खोलकर सुप्त/मृत जीव को जगाया...

हेतम्मन करेव पिडियल्ले: ...और जन्म देने वाली माता (मूल पराशक्ति) के हाथ को पकड़ने का प्रयास किया...

अवळीग इत्तळै तन्न पदकव: ...तब उस जगन्माता ने मुझे अपना अभय पद (पदक/वरदान) प्रदान कर दिया!

व्याख्या: मेरुरजंड के पिछले गुप्त मार्ग (सुषुम्णा) को खोलकर सोई हुई चेतना को जगाया जाता है। जब साधक परम जगन्माता (आद्यशक्ति) की शरण में जाता है, तो वह शक्ति उसे आत्म-साक्षात्कार रूपी अलौकिक पदक (पद) प्रदान करती है।

Stanza 26

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

कोणन कोंबिन मेले | माणदेले कपियेरि

जाणेय मनेयोळ्होगलु | अवळेद्दु

कोणन काल मुरिदिहळु || 26 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

कोणन कोंबिन मेले माणदेले कपियेरि: भैंसे (तामस/अज्ञान) के सींगों पर निरंतर
चंचल बंदर (मन) चढ़ गया...

जाणेय मनेयोळहोगलु: ...और जब वह चतुर स्त्री (विशुद्ध बुद्धि/साधना) के घर में
घुसा...

अवळेदु कोणन काल मुरिदिहळु: ...तब उस चतुर स्त्री ने जागकर उस अज्ञान रूपी
भैंसे का पैर ही तोड़ दिया!

व्याख्या: भैंसा तमोगुण/अज्ञान का और बंदर चंचल मन का प्रतीक है। जब चंचल मन
अज्ञान के बल पर आत्मा को भटकाने की कोशिश करता है, तब जागृत विवेक रूपी चतुर
स्त्री (जाणे) उठकर अज्ञान के मूलाधार को ही नष्ट कर देती है।

Stanza 27

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

हेमकूटद तुदिगे | आ महागजेरि

सोमन कळेय सविदुंडु | मदवेरि

कामन पिडिदु बडियित्तु || 27 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

हेमकूटद तुदिगे आ महागजेरि: हेमकूट पर्वत (सहस्रार/मस्तक) के शिखर पर वह
महा-गज (जागृत प्राण/साधक) चढ़ गया...

सोमन कळेय सविदुंडु मदवेरि: ...और चंद्रमा की कला (सहस्रार का सोम-अमृत)
का पान करके परम आनंद में झूम उठा...

कामन पिडिदु बडियित्तु: ...और उस आनंद के मद में उसने कामदेव (समस्त
वासनाओं) को पकड़कर पीट-पीटकर नष्ट कर दिया!

व्याख्या: जब साधक का प्राण-रूपी हाथी सहस्रार चक्र (हेमकूट) पर पहुँचता है, तो वहाँ
सोम-अमृत का स्वाद पाकर वह इतना शक्तिशाली हो जाता है कि कामदेव (काम-वासना)
को सर्वथा भस्म कर देता है।

Stanza 28

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

पश्चिमद कोळदल्लि अच्छ तावरेयरळि

निश्चळद गंधवेसेलके | अद कंडु

सच चित्त भ्रमरवेरगित्तु || 28 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

पश्चिमद कोळदल्लि अच्छ तावरेयरळि: पश्चिम दिशा के सरोवर (सुषुम्णा का
अंतिम बिंदु/सहस्रार) में निर्मल कमल खिल उठा...

निश्चळद गंधवेसेलके: ...और उससे स्थिर, अलौकिक सुगंध चारों ओर फैलने लगी...

अद कंडु सच चित्त भ्रमरवेरगित्तु: ...उसे देखकर साधक का शुद्ध चित्त रूपी भौंरा
उस पर टूट पड़ा और लीन हो गया!

व्याख्या: योगशास्त्र में सुषुम्णा नाड़ी के ऊपरी भाग को 'पश्चिम द्वार' कहा जाता है। वहाँ सहस्रार रूपी कमल जब विकसित होता है, तो उससे जो शान्ति और आनंद की सुगंध उठती है, साधक का शुद्ध मन (सच्चित्त भ्रमर) उसमें सदा के लिए निमग्न हो जाता है।

9. Stanza 29

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

नवपुरदोळगोंदु | नवरत्न बेलेयागे

नवनारियरु अद कंडु | कोळागि

भवसूत्र हरिदु बयलादे || 29 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

नवपुरदोळगोंदु नवरत्न बेलेयागे: नौ द्वारों वाले शरीर (नवपुर) में एक अमूल्य नवरत्न (आत्मा) प्रकट हुआ...

नवनारियरु अद कंडु कोळागि: ...उसे देखकर नौ स्त्रियाँ (नौ द्वार/इंद्रिय वृत्तियाँ) मोहित और शांत हो गईं...

भवसूत्र हरिदु बयलादे: ...और इस प्रकार संसार का बंधन (संसार-सूत्र) टूट गया और मैं परम शून्य (बयलु) में लीन हो गई!

व्याख्या: नवद्वार रूपी शरीर में जब आत्म-रत्न का अमूल्य मूल्य समझ आता है, तो दसों इन्द्रियाँ और उनकी वृत्तियाँ अंतर्मुखी होकर शांत हो जाती हैं। इसके परिणामस्वरूप जन्म-मरण का सांसारिक धागा (भवसूत्र) कट जाता है और साधक परम शून्य (ब्रह्म) में समा जाता है।

Stanza 30

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

बेट्टद मेल्गिच्चु | सुट्टित्तु काननव

अष्टमृगजातियळिदवु | अद कंडु

बट्टबयलोळगे मेरेदेनु || 30 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

बेट्टद मेल्गिच्चु सुट्टित्तु काननव: पर्वत (शरीर/मस्तक) के ऊपर लगी ज्ञान-अग्नि ने वासना रूपी जंगल को जला दिया...

अष्टमृगजातियळिदवु: ...और उसमें रहने वाले आठ प्रकार के पशु (अष्ट-राग/काम, क्रोध आदि आठ विकार) जलकर भस्म हो गए...

अद कंडु बट्टबयलोळगे मेरेदेनु: ...यह देखकर मैं उस विस्तृत परम शून्य (बट्टबयल) में आनंद से सुशोभित हुई!

व्याख्या: ज्ञान-अग्नि जब जागृत होती है, तो वह अज्ञान के विशाल वन को जला देती है। उसमें आठ प्रकार के पशु (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, राग, द्वेष) भस्म हो जाते हैं। विकारों के जलते ही केवल निरंजन 'बयलु' (परम शून्य) ही शेष बचता है।

Stanza 31

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

कोंडक्के बीळवंथ लंडल्लीळु तानु

दंडेय कुणिके सडिलिसुलु | कोंडद

केंडदोळगागि मुळुगिदळु || 31 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

कोंडक्के बीळवंथ लंडस्त्रीळु तानु: कुंड (अग्नि-कुंड/संसार) में गिरने वाली कुटिल स्त्री
(अहंकारी बुद्धि/अज्ञान)...

दंडेय कुणिके सडिलिसुलु: ...जब किनारे की फाँसी/रस्सी ढीली पड़ी...

कोंडद केंडदोळगागि मुळुगिदळु: ...तो वह कुंड के दहकते अंगारों में गिरकर भस्म
हो गई!

व्याख्या: कुटिल अज्ञान रूपी स्त्री, जो अब तक अहंकार की रस्सी से टंगी थी, ज्ञान-अग्नि के
प्रकट होते ही रस्सी ढीली हो गई और वह ज्ञान-कुंड के अंगारों में समाकर सदा के लिए नष्ट
हो गई।

Stanza 32

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

कुंडलीय सर्पन | तुंड मेलके नेगेय

मंडलवु मूरु बेळगागि | उरियुव-

खंडज्योतियोळु बयलादे || 32 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

कुंडलीय सर्पन तुंड मेलके नेगेय: कुंडलिनी सर्पिणी का फन जब ऊपर की ओर
उछला...

मंडलवु मूरु बेळगागि: ...तब तीनों मंडल (सूर्य, चंद्र और अग्नि मंडल) दिव्य प्रकाश से जगमगा उठे...

उरियुवखंडज्योतियोळु बयलादे: ...और उस प्रज्वलित अखंड ज्योति में मैं स्वयं को मिटाकर परम शून्य हो गई!

व्याख्या: जब मूलाधार में सोई कुंडलिनी शक्ति ऊपर की ओर उठती है, तो शरीर के तीन मंडल (अग्नि, सूर्य, चंद्र मंडल) प्रकाशित हो जाते हैं। साधक उस अखंड ईश्वर-ज्योति में लीन होकर स्वयं परम ब्रह्म (बयलु) बन जाता है।

Stanza 33

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

अष्टावरणद हण्णु बट्टबयलोळगिरलु

अष्टांगयोगवनु माडि | बळुलुवरु

दृष्टियोळगिरुवुदनु मरेतु || 33 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

अष्टावरणद हण्णु बट्टबयलोळगिरलु: अष्टावरण (गुरु, लिंग, जंगम, पादोदक, प्रसाद, विभूति, रुद्राक्ष, मंत्र) रूपी फल जब व्यापक शून्य में सुलभ है...

अष्टांगयोगवनु माडि बळुलुवरु: ...तब भी लोग शुष्क अष्टांग योग (यम, नियम आदि) के क्लेश में थके जाते हैं...

दृष्टियोळगिरुवुदनु मरेतु: ...और अपनी ही दृष्टि (भीतर) में विद्यमान सत्य को भूल जाते हैं!

व्याख्या: अक्ल महादेवी जी यहाँ बाह्य कठिन योग-साधना की तुलना में सहज शिव-भक्ति और अष्टावरण को श्रेष्ठ मानती हैं। जो परमात्मा हमारी अपनी आँखों के सामने और भीतर विद्यमान है, उसे न देखकर लोग कठिन अष्टांग योग के क्लेश में व्यर्थ थकते हैं।

Stanza 34

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

नेल निल्ल तोटदलि | एलेयिल्ल गिड हुट्टि

फलविल्ल हण्णु केडेदरुलु | अद कंडु

मेललिल्ल होगि सविदिहेनु || 34 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

नेल निल्ल तोटदलि एलेयिल्ल गिड हुट्टि: बिना भूमि वाले बगीचे (चिदाकाश) में बिना पत्तियों वाला वृक्ष उगा...

फलविल्ल हण्णु केडेदरुलु: ...और उसमें बिना किसी भौतिक फल वाला एक अलौकिक फल पककर गिरा...

अद कंडु मेललिल्ल होगि सविदिहेनु: ...उसे देखकर मैंने बिना चबाए (बिना भौतिक प्रयास के) जाकर उसका रस चख लिया!

व्याख्या: यह संध्या भाषा का अनूठा पद है। 'बिना भूमि का बगीचा' चिदाकाश है, 'बिना पत्ते का पेड़' अव्यक्त ब्रह्म-वृक्ष है, और 'अपूर्व फल' आत्मानंद है। साधक भौतिक इंद्रियों के बिना ही उस अलौकिक आत्म-रस का आस्वादन कर लेता है।

Stanza 35

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

सप्तसागर बत्ति | हत्तु हंसेयु सत्तु

मुत्तु माणिकवु भलेदोरे | अदकंडु

सत्तावनु एदु कुणिद || 35 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

सप्तसागर बत्ति हत्तु हंसेयु सत्तु: सातों समुद्र (सात धातुएँ/इंद्रिय विषय) सूख गए और दस हंस (दस प्राण) शांत हो गए...

मुत्तु माणिकवु भलेदोरे: ...तभी परम मोती और माणिक्य (आत्म-ज्योति) प्रकट हुए...

अदकंडु सत्तावनु एदु कुणिद: ...और उस परम धन को देखकर मृतप्राय साधक जीवित होकर आनंद में नाच उठा!

व्याख्या: जब शरीर की सात धातुएँ और दसों प्राण-वृत्तियाँ शांत हो जाती हैं, तब भीतर आत्म-रत्न चमक उठता है। इस आत्म-साक्षात्कार को पाकर अज्ञान में मृत पड़ा जीव पुनः अमूल्य जीवन पाकर परमानंद में नृत्य कर उठता है।

Stanza 36

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

हत्तु सागरदल्लि मत्तु स्नानव माडि

मत्तोदु तेरद उणिसुगळ | नानुंडु

कत्तलेयळिदु बेळगादे || 36 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

हतु सागरदल्लि मतु स्नानव माडि: दस सागरों (दस इंद्रियों या दस प्राण-वायुओं के शुद्ध प्रवाह) में पुनः स्नान करके...

मतोंदु तेरद उणिसुगळ नानुंडु: ...तथा एक अन्य ही दिव्य अलौकिक भोजन (आत्मानंद/ब्रह्म-रस) को ग्रहण करके...

कत्तलेयळिदु बेळगादे: ...अज्ञान का सारा अंधकार मिट गया और मैं परम ज्ञान के प्रकाश से भर गई!

व्याख्या: यहाँ साधना की आंतरिक शुद्धि का निरूपण है। साधक जब दसों इंद्रियों को बहिर्मुखी भोगों से हटाकर आत्मा रूपी सागर में स्नान कराता है और सांसारिक आहार के बदले ब्रह्मानंद का आहार (उणिसु) ग्रहण करता है, तब अज्ञान का अंधकार नष्ट होकर अंतःकरण आत्म-ज्ञान के दिव्य प्रकाश से जगमगा उठता है।

Stanza 37

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

कर्तु श्रीगुरुराय मुत्तिन कवचव

अर्त्तिरिंदेनगे अळवडिसि | अदरिंद

कित्तेनु मायाबलेगळनु || 37 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

कर्तुं श्रीगुरुराय मुत्तिन कवचवः सृष्टि के रचयिता समर्थ सद्गुरुदेव ने
मणियों/मोतियों का एक अभेद्य कवच...

अरुंतिर्यिदेनगे अळवडिसिः ...बड़े प्रेम और वात्सल्य से मुझे धारण करा दिया...

अदरिंद कित्तेनु मायाबलेगळनुः ...और उसी गुरु-कृपा रूपी कवच के बल पर मैंने
माया के सभी जालों को छिन्न-भिन्न कर डाला!

व्याख्या: गुरु की दीक्षा और उनका उपदेश साधक के लिए सुरक्षा-कवच (मुत्तिन कवच) के
समान है। अक्क महादेवी जी मानती हैं कि गुरु द्वारा प्रदत्त इस आध्यात्मिक सुरक्षा-कवच के
कारण ही वे माया-मोह के जाल को आसानी से काटकर मुक्त हो सकीं।

Stanza 38

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

नडेवे लिंगद कूडे | नुडिवे लिंगद कूडे

एडविडदे बर्प विषयादि | भोगव

नूडुवे लिंगमुखगळगे || 38 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

नडेवे लिंगद कूडे नुडिवे लिंगद कूडे: मैं लिंग (इष्टदेव शिव) के साथ ही चलती हूँ
और लिंग के साथ ही वार्तालाप करती हूँ...

एडविडदे बर्प विषयादि भोगवः ...निरंतर सामने आने वाले सभी विषय-भोगों
को...

तूडवे लिंगमुखगळगे: ...मैं स्वयं भोगने के बजाय लिंग के ही मुख में अर्पित कर देती हूँ!

व्याख्या: यह सर्वात्म-भाव और सर्वार्पण भक्ति की पराकाष्ठा है। अक़ मह़ादेवी जी की हर क्रिया (चलना, बोलना) शिव-मय हो गई है। इंद्रियों के सामने आने वाले सभी विषय-भोगों को वे अपने अहंकार के लिए भोगने के स्थान पर 'लिंग-प्रसाद' मानकर इष्टलिंग को ही समर्पित कर देती हैं।

Stanza 39

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

ओंबत्तु चौकद उंबुडुव मनेयन्नु

नंबदले कडेगे तोडगिसि | मुंदण

संभ्रमद मनेगे नडेदेनु || 39 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

ओंबत्तु चौकद उंबुडुव मनेयन्नु: नौ चौकों (नौ द्वारों वाले शरीर) वाले इस क्षणभंगुर घर पर...

नंबदले कडेगे तोडगिसि: ...बिना भरोसा किए, इसे अंतिम मानकर त्याग दिया...

मुंदण संभ्रमद मनेगे नडेदेनु: ...और सामने दिख रहे अनंत आनंद से परिपूर्ण दिव्य धाम (सहस्रार/कैलाश) की ओर बढ़ चली!

व्याख्या: नौ द्वारों वाला यह भौतिक शरीर केवल एक अस्थायी आश्रय है। साधक इस नश्वर शरीर से मोह हटाकर इसे अंतिम साधन के रूप में उपयोग करता है और शाश्वत आनंद प्रदान करने वाले परमात्मा के दिव्य लोक (आंतरिक परम पद) की ओर प्रस्थान करता है।

Stanza 40

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

गुरुवे नन्नय काय | हरनेन्नय मनवू

परम जंगमवे अनुभवा | मुखवेन्न

इरवेल्ल लिंगमयवेंबे || 40 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

गुरुवे नन्नय काय हरनेन्नय मनवू: मेरा शरीर ही सद्गुरु है, मेरा मन ही साक्षात् हर (शिव) है...

परम जंगमवे अनुभवा मुखवेन्न: ...मेरी आध्यात्मिक अनुभूति ही परम जंगम (चल-लिंग) है...

इरवेल्ल लिंगमयवेंबे: ...इस प्रकार मेरा संपूर्ण अस्तित्व केवल और केवल 'लिंगमय' (शिव-स्वरूप) ही है!

व्याख्या: यह 'अंग-लिंग समरसता' का निरूपण है। साधिका का शरीर, मन और अनुभूति अब पृथक् नहीं रहे; शरीर गुरु-स्वरूप, मन शिव-स्वरूप और अंतरात्मा की अनुभूति जंगम-स्वरूप बन चुकी है। उनका संपूर्ण जीवन ही लिंगमय (ईश्वरमय) हो गया है।

Stanza 41

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

उट्ट सीरेय सीळि | तोट्ट तोडिगेय मुरिदु

बिट्टेहेनु नानु बिडुमुडिय | एले देव

कोट्टिहेनेन्न तनुमनव || 41 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

उट्ट सीरेय सीळि तोट्ट तोडिगेय मुरिदु: पहनी हुई साड़ी को फाड़कर, धारण किए हुए आभूषणों को तोड़कर...

बिट्टेहेनु नानु बिडुमुडिय: ...और अपने केशों को खोलकर सांसारिक लज्जा को छोड़ दिया है...

एले देव कोट्टिहेनेन्न तनुमनव: ...हे प्रभु! मैंने अपना यह तन और मन पूर्णतः आपके चरणों में समर्पित कर दिया है!

व्याख्या: अक्क महादेवी जी के वैराग्य और पूर्ण समर्पण का यह ऐतिहासिक तथा आध्यात्मिक शिखर है। लोक-लज्जा, शारीरिक आभूषण और वस्त्र रूपी सांसारिक बंधनों को त्यागकर वे दिगंबर (केशाम्बरा) हो गईं। उन्होंने अपना संपूर्ण तन-मन अपने प्रियतम चैन्नमल्लीकार्जुन को सौंप दिया।

Stanza 42

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

षडचक्रदोळगण | षड्विध लिंगके

षड्विधेंद्रियव | मुखमाडि विषयगळ

षडभक्तिर्यिंदळूडुतिहेनु || 42 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

षडचक्रदोळगण षड्विध लिंगके: शरीर के छह चक्रों में विराजमान छह प्रकार के लिंगों (आचार, गुरु, शिव, जंगम, प्रसाद, महालिंग) को...

षड्विधेंद्रियव मुखमाडि विषयगळ: ...अपनी छह इंद्रियों के माध्यम से आने वाले विषयों को द्वार बनाकर...

षडभक्तिर्यिंदळूडुतिहेनु: ...छह प्रकार की भक्ति (श्रद्धा, निष्ठा, अवधान, अनुभव, आनंद, समरस) से भोग-प्रसाद रूप में अर्पित कर रही हूँ!

व्याख्या: वीरशैव दर्शन के 'षट्-स्थल' और 'षट्-लिंग' का योग से समन्वय है। छह चक्रों में स्थित छह लिंगों को छह इंद्रियों के माध्यम से विषय-भोग अर्पित किए जाते हैं, जिससे भोग भी योग बन जाता है।

Stanza 43

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

आधारादोळगण | आदिय लिंगक्के

मेदिनिय घ्राणमुखमाडि | गंधवनु

मोददिंद कोडुव सद्भक्त || 43 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

आधारादोळगण आदिय लिंगक्के: मूलाधार चक्र में स्थित आचार-लिंग (आदि लिंग) को...

मेदिनिय घ्राणमुखमाडि: ...पृथ्वी तत्त्व की नासिका (घ्राणेंद्रिय) को मुख बनाकर...

गंधवनु मोददिंद कोडुव सद्भक्त: ...जो साधक सुगंध रूपी विषय को सहर्ष समर्पित करता है, वही सच्चा 'सद्भक्त' है।

व्याख्या: मूलाधार चक्र में पृथ्वी तत्त्व और आचार-लिंग का स्थान है। नासिका से ली जाने वाली उत्तम गंध को स्वयं के सुख के लिए न लेकर ईश्वर का प्रसाद मानकर अर्पित करना ही 'सद्भक्त' का लक्षण है।

Stanza 44

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

आरेसळ कमळद कर्तु गुरु लिंगक्के

सारजिह्वेयनु मुखमाडि | रसगळ

पूरैसिकोडुव निजिंष्ठ || 44 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

आरेसळ कमळद कर्तृ गुरु लिंगक्के: छह पंखुड़ियों वाले कमल (स्वाधिष्ठान चक्र) के स्वामी गुरु-लिंग को...

सारजिह्वेयनु मुखमाडि: ...रस-मयी जीभ (रसना इंद्रिय) को द्वार बनाकर...

रसगळ पूरैसिकोडुव निजिंष्ठ: ...सभी रसों का आस्वादन कराकर जो समर्पित करता है, वही 'महेश/निष्ठावान साधक' (निजिंष्ठ) है।

व्याख्या: स्वाधिष्ठान चक्र (छह पंखुड़ियों वाला कमल) में जल तत्त्व और गुरु-लिंग विद्यमान हैं। जीभ द्वारा ग्रहण किए जाने वाले स्वादों को गुरु-लिंग को अर्पित करना निष्ठावान भक्त (माहेश्वर) की साधना है।

Stanza 45

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

हत्तेसळ कमळद | कर्तृशिवलिंगक्के

मत्तु नेत्रगळ मुखमाडि | रूपिन

तुत्तुगळ कोडुवनवधानि || 45 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

हत्तेसळ कमळद कर्तृशिवलिंगके: दस पंखुडियों वाले कमल (मणिपूरक चक्र) के स्वामी शिव-लिंग को...

मत्तु नेत्रगळ मुखमाडि: ...आँखों (दृष्टि इंद्रिय) को माध्यम बनाकर...

रूपिन तुत्तुगळ कोडुवनवधानि: ...सुंदर रूपों के ग्रास (आहार) अर्पित करने वाला साधक ही सच्चा 'अविधानी/अवधान भक्त' (प्रसादी) है।

व्याख्या: मणिपूरक चक्र (दस पंखुडियों का कमल) में अग्नि तत्त्व और शिव-लिंग का निवास है। आँखों से देखे जाने वाले सुंदर दृश्यों और रूपों को शिव का रूप मानकर उन्हें समर्पित करना अवधान-भक्ति है।

Stanza 46

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

द्वादशदळ कमळद लाद चरलिंगके

सादरदि त्वक्क मुखमाडि | स्फुरुशनदि

स्वादवनु कोडुवननुभावि || 46 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

द्वादशदळ कमळद लाद चरलिंगके: बारह पंखुडियों वाले कमल (अनाहत चक्र) में स्थित जंगम-लिंग (चर-लिंग) को...

सादरदि त्वक्क मुखमाडि: ...आदरपूर्वक त्वचा (स्पर्श इंद्रिय) को मुख बनाकर...

स्फुरशनदि स्वादवनु कोडुवननुभावि: ...स्पर्श के आनंद को अर्पित करने वाला
साधक ही सच्चा 'अनुभावी' (प्राणलिंगी) है।

व्याख्या: अनाहत चक्र (बारह पंखुडियों का कमल) में वायु तत्त्व और जंगम-लिंग विद्यमान
हैं। त्वचा द्वारा होने वाले स्पर्श-सुख को लिंग को समर्पित करके साधक 'अनुभावी' अवस्था
को प्राप्त करता है।

Stanza 47

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

षोडश कमळद | लाडुव लिंगक्के

गाढदिं श्रोत्रमुखमाडि | शब्दवनु

नीडि कोडुतिर्प परिणामि || 47 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

षोडश कमळद लाडुव लिंगक्के: सोलह पंखुडियों वाले कमल (विशुद्ध चक्र) में लीला
करने वाले प्रसाद-लिंग को...

गाढदिं श्रोत्रमुखमाडि: ...गहरे भाव से कानों (श्रोत्र इंद्रिय) को मुख बनाकर...

शब्दवनु नीडि कोडुतिर्प परिणामि: ...समस्त शब्दों और ध्वनियों को अर्पित करने
वाला साधक ही 'परिणामी' (शरण) है।

व्याख्या: विशुद्ध चक्र (सोलह पंखुड़ियों का कमल) में आकाश तत्त्व और प्रसाद-लिंग का निवास है। कानों से सुनी जाने वाली सभी ध्वनियों और वचनों को लिंग-प्रसाद के रूप में अर्पित करने वाला 'परिणामी' कहलाता है।

Stanza 48

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

द्विदलत्रिकूटदलि | हुदुगिद महालिंगके

सदमल हृदयमुखमाडि | तृप्तिनु

ओदगि कोडुतिहनु समरसनु || 48 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

द्विदलत्रिकूटदलि हुदुगिद महालिंगके: दो पंखुड़ियों वाले त्रिकूट (आज्ञा चक्र/भूमध्य) में छिपे हुए महा-लिंग को...

सदमल हृदयमुखमाडि: ...अपने अत्यंत निर्मल हृदय/अंतःकरण को मुख बनाकर...

तृप्तिनु ओदगि कोडुतिहनु समरसनु: ...परम तृप्ति और आनंद का भोग लगाने वाला साधक ही 'समरस' (ऐक्य) अवस्था वाला सिद्ध है।

व्याख्या: आज्ञा चक्र (दो पंखुड़ियों वाला त्रिकूट) में महालिंग विद्यमान हैं। जब निर्मल अंतःकरण से महालिंग का ध्यान किया जाता है, तो जीव और ब्रह्म का भेद मिट जाता है और साधक 'समरस' (ऐक्य स्थल) को प्राप्त कर लेता है।

Stanza 49

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

अंगदाशेयनळिदु लिंगदाशेयवुळिदु

संगसुधेयने नलिदुंडु | तनुमनद

भंगवनु हरिदु सुखियादे || 49 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

अंगदाशेयनळिदु लिंगदाशेयवुळिदु: देह (अंग) की इच्छाओं को मिटाकर केवल लिंग (ईश्वर) की चाह को बनाए रखा...

संगसुधेयने नलिदुंडु: ...और शिव-मिलन के अमृत का आनंदपूर्वक पान किया...

तनुमनद भंगवनु हरिदु सुखियादे: ...जिससे शरीर और मन के सभी कष्ट व विक्षेप दूर हो गए और मैं परम सुखी हो गई!

व्याख्या: जब देहाशक्ति (शरीर की लालसा) समाप्त हो जाती है और केवल 'लिंगाशक्ति' (शिव की चाह) शेष रहती है, तब साधक शिव-संयोग के अमृत रस को पीता है। इससे जन्म-जन्मांतर के शारीरिक और मानसिक संताप मिट जाते हैं।

Stanza 50

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

गुरु निम्म चरणव | मरेयेनु मरेदडे

परिभवद बाधे बरलय्य | कडेयल्लि

दोरये नरकदोळु तुळियय्य || 50 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

गुरु निम्न चरणव मरेयेनु मरेदडे: हे गुरुदेव! मैं आपके श्रीचरणों को कभी न भूलूँ;
और यदि भूल जाऊँ...

परिभवद बाधे बरलय्य: ...तो मुझ पर घोर अपमान और कष्ट की पीड़ा आ जाए!

कडेयल्लि दोरये नरकदोळु तुळियय्य: ...और हे प्रभु! अंत में मुझे नरक की घोर
यातनाओं में धकेल देना!

व्याख्या: यह भक्त की अपने गुरु के प्रति अनन्य निष्ठा और आत्म-दण्ड का संकल्प है। अक्क
महादेवी जी कहती हैं कि गुरु-चरणों का स्मरण ही उनका जीवन है। यदि कभी वे गुरु-
स्मरण से विमुख हों, तो वे हर दुख और नरक की सजा भुगतने को तैयार हैं। यह गुरु-भक्ति
की सर्वोच्च पराकाष्ठा है।

Stanza 51

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

नडेवल्लि नुडिवल्लि | उडुवल्लि उंबल्लि

बिडेनय्य निम्म चरणवनु | ई छ लव

कडेमुट्टिसेनेगे गुरुराय || 51 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

नडेवल्लि नुडिवल्लि उडुवल्लि उंबल्लि: चलते समय, बोलते समय, वस्त्र पहनते समय और भोजन करते समय...

बिडेनय्य निम्म चरणवनु: ...हे प्रभु! मैं आपके श्रीचरणों का ध्यान कभी नहीं छोड़ूँगी!

ई छळव कडेमुट्रिसेनेगे गुरुराय: ...मेरे इस दृढ़ संकल्प (हठ/निष्ठा) को अंत तक सिद्ध कराइए, हे गुरुदेव!

व्याख्या: यह अनन्य साधना और दृढ़ संकल्प का पद है। अक्क महादेवी जी कहती हैं कि जीवन की प्रत्येक सामान्य क्रिया (उठना, बैठना, खाना, पहनना) में भी वे गुरु-चरणों का स्मरण नहीं छोड़ेंगी। वे अपने सद्गुरु से प्रार्थना करती हैं कि उनके इस भक्ति-व्रत को पूर्णता तक पहुँचाया जाए।

Stanza 52

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

घनगुरुवे नीयेन्न | मनदोळगिरु कंड

मनव बिट्टिनिय अगलिदरे | निमंगिष्णु

अनघशिवशरणरडियाणे || 52 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

घनगुरुवे नीयेन्न मनदोळगिरु कंड: हे परम श्रेष्ठ सद्गुरु! आप सदा मेरे मन के भीतर विराजमान रहिए।

मनव बिट्टिनिय अगलिदरे: ...यदि आप मेरे मन को छोड़कर मुझसे दूर चले गए...

निमगिन्नु अनघशिवशरणरडियाणे: ...तो आपको निष्पाप शिवशरणों के श्रीचरणों की सौगंध है!

व्याख्या: यहाँ भक्त का अपने प्रियतम प्रभु/गुरु पर प्रेमपूर्ण अधिकार दिखाई देता है। वे गुरु को अपने मन में निरंतर बसाए रखने के लिए निष्पाप शिवशरणों की आन (सौगंध) देती हैं, ताकि गुरु-कृपा का विच्छेद कभी न हो।

Stanza 53

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

आवाव भोगगळ | जीवभावदि नानु

भाविसुत पिरिदु सविदरे | नरकद

बावियोळगद्दि तेंगेय्य || 53 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

आवाव भोगगळ जीवभावदि नानु: किसी भी प्रकार के सांसारिक भोगों को यदि मैं 'जीव-भाव' (अहंकार/स्वार्थ) से...

भाविसुत पिरिदु सविदरे: ...अपनी व्यक्तिगत तृप्ति मानकर रसपूर्वक भोगूँ...

नरकद बावियोळगद्दि तेंगेय्य: ...तो हे प्रभु! मुझे तुरंत नरक के कुएँ में डुबोकर सजा दीजिए!

व्याख्या: यह पूर्ण वैराग्य और निष्काम भाव की कठोर प्रतिज्ञा है। यदि मन में तनिक भी स्वार्थ या सांसारिक आसक्ति उत्पन्न हो, तो वे स्वयं को नरक का भागी मानने को तैयार हैं। वे हर भोग को केवल शिव-प्रसाद के रूप में ही स्वीकार करना चाहती हैं।

Stanza 54

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

गुरु कोट्ट भोगवनु | गुरुविगे नानित्तु

गुरुमुखदिंद ओदगिद | शेषवनु

अरिविंदु उंडु सुखियादे || 54 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

गुरु कोट्ट भोगवनु गुरुविगे नानित्तु: गुरु द्वारा प्रदान किए गए सभी भोगों को मैंने पुनः गुरु (शिव) के ही अर्पित कर दिया...

गुरुमुखदिंद ओदगिद शेषवनु: ...और गुरु के मुख/प्रसाद से जो अवशिष्ट (शेष) प्राप्त हुआ...

अरिविंदु उंडु सुखियादे: ...उस गुरु-प्रसाद को आत्म-ज्ञान (अरिउ) पूर्वक ग्रहण करके मैं परमसंतोष और सुख को प्राप्त हुई!

व्याख्या: यह 'प्रसाद-स्थल' का सार है। ईश्वर द्वारा दी गई हर वस्तु को पहले ईश्वर को समर्पित किया जाता है, फिर उस अर्पित वस्तु को 'प्रसाद' समझकर ज्ञानपूर्वक ग्रहण करने से साधक सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर परम सुखी हो जाता है।

Stanza 55

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

लिंगवु बंदेन्न अंगदोळु नेलसलु

संगदोळ् ज्योतिरूपाद कारणदि

इंगिदवु एन्न भवभववु || 55 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

लिंगवु बंदेन्न अंगदोळु नेलसलु: जब इष्टलिंग (परमात्मा) आकर मेरे शरीर (अंग) में विराजमान हो गया...

संगदोळ् ज्योतिरूपाद कारणदि: ...और उनके संयोग से मेरा संपूर्ण अस्तित्व ज्योति-स्वरूप (प्रकाशमय) बन गया...

इंगिदवु एन्न भवभववु: ...तो उसी कारण मेरे जन्म-जन्मांतर के सभी संताप और पुनर्जन्म समाप्त हो गए!

व्याख्या: यह 'अंग-लिंग समरसता' का परिणाम है। जब परमात्मा साधक के अंतःकरण और शरीर में प्रतिष्ठित हो जाते हैं, तो साधक का देह-भाव मिट जाता है और वह ज्योतिर्मय हो जाता है। इसके साथ ही जन्म-मरण का चक्र सर्वथा नष्ट हो जाता है।

Stanza 56

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

एल्ल भोगगळल्लि | पल्लविसि इरुलिहरु

बल्लडे अवर परि बेरे | शरणर

खुल्लमानवरु जरिवरु || 56 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

एल्ल भोगगळल्लि पल्लविसि इरुलिहरु: बाहर से देखने पर शिवशरण सभी सांसारिक भोगों के बीच आनंद से रहते हुए दिखते हैं...

बल्लडे अवर परि बेरे: ...किंतु जो जानते हैं, वे समझते हैं कि उनकी आंतरिक अवस्था (आसक्ति-रहित) सर्वथा भिन्न है!

शरणर खुल्लमानवरु जरिवरु: ...अज्ञानी और नीच बुद्धि वाले लोग (खुल्ल मनुष्य) शरणों के इस रहस्य को न समझकर केवल उनकी निंदा करते हैं।

व्याख्या: जीवन्मुक्त शरण संसार में रहकर भी जल में कमल की तरह निर्लिप्त रहते हैं। वे सब कुछ भोगते हुए भी भीतर से अनसक्त (अकर्ता) रहते हैं। अज्ञानी लोग बाहरी आचरण देखकर उनकी निंदा करते हैं, क्योंकि वे शरणों की उच्च आध्यात्मिक स्थिति को नहीं समझ पाते।

Stanza 57

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

बल्लवरे बल्लरु | एल्लरिगे तिळियदु

कल्लोळु मिसुनियिरुवंते | अदरनुव

बल्लवरिगे अर्थ तिळियुवुदु || 57 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

बल्लवरे बल्लरु एल्लरिगे तिळियुवुदु: जो ज्ञानी हैं, केवल वही इस रहस्य को जानते हैं, यह सभी की समझ में नहीं आ सकता...

कल्लोळु मिसुनियिरुवंते: ...जिस प्रकार पत्थर या अयस्क के भीतर शुद्ध सोना छिपा रहता है...

अदरनुव बल्लवरिगे अर्थ तिळियुवुदु: ...उसी प्रकार जो इस रहस्यमय साधना के मर्म को जानते हैं, केवल उन्हीं को इसका वास्तविक अर्थ समझ आता है।

व्याख्या: जैसे साधारण पत्थर के अंदर छिपे सोने को केवल पारखी जौहरी ही पहचान पाता है, उसी प्रकार बाह्य क्रियाओं के पीछे छिपे आंतरिक आत्म-ज्ञान के रहस्य को केवल सिद्ध साधक और तत्त्वज्ञानी ही समझ सकते हैं।

Stanza 58

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

नाना जन्मगळल्लि | हीनळागिरुतिरुलु

नीने बंदेन्न कैपिडिद | कारणदि

मौनमुद्रियोळोडवेरेदे || 58 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

नाना जन्मगळल्लि हीनळागिरुतिरुलु: अनेक जन्मों तक मैं अज्ञान और नीच योनियों में भटकती रही...

नीने बंदेन्न कैपिडिद कारणदि: ...किंतु हे गुरु! जब आपने स्वयं आकर मेरा हाथ थाम लिया...

मौनमुद्रियोळोडवेरेदे: ...तो उसी कारण मैं 'मौन मुद्रा' (शांत परब्रह्म अवस्था) में सदा के लिए लीन हो गई!

व्याख्या: जीव अनेक जन्मों के भटकाव के बाद गुरु-कृपा से ही संभलता है। जब सद्गुरु साधक का हाथ थाम लेते हैं, तो साधक के मन की चंचलता शांत हो जाती है और वह अनिर्वचनीय 'मौन' (शांत ब्रह्म-अवस्था) में विलीन हो जाता है।

Stanza 59

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

हिंदण भववेल्ल | संदिहविल्लिगे

मुंदिनु एनगे भवविल्ल | गुरुकराय

होंदिदेतु निम्म चरणव || 59 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

हिंदण भववेल्ल संदिहविल्लिगे: मेरे पिछले सभी जन्मों के पाप और कर्मबंधन यहीं समाप्त हो गए हैं...

मुंदिन्नु एनगे भवविल्लः ...और अब भविष्य में मेरे लिए कोई पुनर्जन्म नहीं बचा है!

गुरुकराय होंदिदेनु निम्म चरणवः ...क्योंकि हे गुरुदेव! मैंने आपके अभय श्रीचरणों को सदा के लिए प्राप्त कर लिया है।

व्याख्या: यह पूर्ण मुक्ति (जीवन्मुक्ति) का आश्चर्य उद्घोष है। गुरु के चरणों की शरण मिलते ही संचित और प्रारब्ध कर्म भस्म हो जाते हैं। साधिका का भूतकाल समाप्त हो गया और भविष्य का पुनर्जन्म सदा के लिए मिट गया।

Stanza 60

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

एन्न कायवे गुरु | एन्न प्राणवे लिंग

एन्नंतरात्मा चरलिंग | वागलु

इन्नुटे एनगे तनुमनवु || 60 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

एन्न कायवे गुरु एन्न प्राणवे लिंगः मेरा यह स्थूल शरीर ही सद्गुरु है, मेरा प्राण ही इष्टलिंग है...

एन्नंतरात्मा चरलिंग वागलुः ...और मेरी अंतरात्मा ही जंगम (चर-लिंग) बन चुकी है...

इन्नुटे एनगे तनुमनवुः ...जब सब कुछ ईश्वरीय हो गया, तो अब मेरा अपना पृथक् तन और मन कहाँ बचा?

व्याख्या: त्रिविध तत्त्व (गुरु, लिंग, जंगम) और साधक के त्रिविध शरीर (स्थूल, सूक्ष्म, कारण) का पूर्ण ऐक्य हो चुका है। जब देह गुरु, प्राण लिंग और आत्मा जंगम हो गए, तो व्यक्तिगत अहंकार या पृथक् तन-मन का कोई अस्तित्व ही नहीं रहता।

Stanza 61

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

नले नल्लन सुखव | नेल्लरोळुरुहुवळे

बल्लवरदिर तेरदोळु | निजतृप्ति

सल्लीलेयिंद घटिसुवुदु || 61 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

नले नल्लन सुखव नेल्लरोळुरुहुवळे: क्या कोई स्त्री अपने प्रियतम (पति) के एकांत सुख का वर्णन सबके सामने ढिंढोरा पीटकर कर सकती है?

बल्लवरदिर तेरदोळु: ...ज्ञानी जन भी उसी प्रकार मौन रहकर...

निजतृप्ति सल्लीलेयिंद घटिसुवुदु: ...उस आत्म-सुख की नीरव निज-तृप्ति को बड़ी सहजता और लीला से अपने भीतर अनुभव करते हैं।

व्याख्या: भक्ति और ब्रह्मानंद अत्यंत गुह्य तथा व्यक्तिगत अनुभव हैं। जैसे पति-पत्नी के अनन्य प्रेम का सुख शब्दों में सबके सामने नहीं कहा जा सकता, उसी प्रकार आत्मा और परमात्मा के मिलन का आनंद भी अनिर्वचनीय है। ज्ञानी साधक उसे भीतर ही सहज लीला रूप में अनुभव करते हैं।

Stanza 62

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

चिन्न - बण्णगळंते रत्न दीप्तिगळंते

भिन्नविल्लदले बेरदिहरु | लिंगदोळु

पन्नगधरन शरणरु || 62 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

चिन्न बण्णगळंते रत्न दीप्तिगळंते: जैसे सोने और उसके पीले रंग में, या जैसे रत्न और उसकी आभा (चमक) में कोई अंतर नहीं होता...

भिन्नविल्लदले बेरदिहरु लिंगदोळु: ...वैसे ही बिना किसी भेद या द्वैत के परमात्मा में लीन हो गए हैं...

पन्नगधरन शरणरु: ...मस्तक पर सर्प धारण करने वाले भगवान शिव के सच्चे शरण!

व्याख्या: यह अद्वैत-सयुज्य भक्ति का सुंदर दृष्टांत है। सोने और उसके रंग को, या रत्न और उसके प्रकाश को अलग नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार शिव के शरण (भक्त) इष्टलिंग में इस प्रकार अभिन्न होकर मिल जाते हैं कि भक्त और भगवान का भेद सदा के लिए मिट जाता है।

Stanza 63

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

निम्म तोत्तिन तोत्तु | निम्म भृत्यन भृत्ये

निम्मडिय नानु मरेवोकके | घनगुरुवे

निम्म कृपेयिंद सलहय्य || 63 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

निम्म तोत्तिन तोत्तु निम्म भृत्यन भृत्ये: आपके दासों की दासी, और आपके सेवकों की सेविका बनकर...

निम्मडिय नानु मरेवोकके: ...मैं आपके श्रीचरणों की शरण में आई हूँ...

घनगुरुवे निम्म कृपेयिंद सलहय्य: ...हे परम श्रेष्ठ गुरुदेव! अपनी अपार कृपा से मेरा रक्षण और कल्याण कीजिए!

व्याख्या: अक्क महादेवी जी यहाँ दास्य-भक्ति की पराकाष्ठा व्यक्त करती हैं। वे ईश्वर के सीधे भक्त होने का भी अहंकार न करके, शिव-भक्तों के दासों की दासी बनकर गुरु-चरणों की शरण लेती हैं और रक्षा की गुहार लगाती हैं।

Stanza 64

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

भक्तर मनेयल्लि | तोत्तागि इरिसेन्न

भक्तरुंडुळिंद वरशेष | वनु कोंब

नित्यसुखवेनगे कोडु गुरुवे || 64 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

भक्तर मनेयल्लि तोत्तागि इरिसेन्नः हे गुरुदेव! मुझे शिव-भक्तों के घरों में सेविका
(दासी) बनाकर रख दीजिए...

भक्तरुंडुळिंद वरशेष वनु कोंबः ...तथा भक्तों के भोजन करने के बाद बचा हुआ
उत्तम प्रसाद ग्रहण करने का...

नित्यसुखवेनगे कोडु गुरुवेः ...शाश्वत और नित्य सुख मुझे प्रदान कीजिए!

व्याख्या: भक्त-दास्य और भक्त-उच्छिष्ट (प्रसाद) की महिमा का वर्णन है। अक्क महादेवी जी
के लिए भक्तों की सेवा करना और उनका प्रसादावशेष पाना ही सर्वोच्च 'नित्य-सुख' है। वे
किसी राजसी वैभव की नहीं, केवल भक्त-सेवा की कामना करती हैं।

Stanza 65

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

एन्नवगुणगळ | निष्ठु नी नोडदले

चेन्नमल्ले श कृपेगेय्द | करुणदि

एन्न भवबंध परियित्तु || 65 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

एन्नवगुणगळ निष्ठु नी नोडदले: मेरे अवगुणों और त्रुटियों की ओर बिना देखे...

चेन्नमल्ले श कृपेगेय्द करुणादि: ...जब मेरे प्रियतम प्रभु चेन्नमल्लिकार्जुन ने अपार करुणा करके मुझ पर कृपा की...

एन्न भवबंध परियित्तु: ...तो उसी क्षण मेरे संसार के सारे बंधन छिन्न-भिन्न होकर कट गए!

व्याख्या: यह ईश्वर की अहैतुकी कृपा (करुणा) का अनुभव है। जीव में अनेक कमियाँ हो सकती हैं, लेकिन जब इष्टदेव चेन्नमल्लिकार्जुन भक्त के अवगुणों को अनदेखा करके कृपा-दृष्टि डालते हैं, तो सारे सांसारिक बंधन पल भर में नष्ट हो जाते हैं।

Stanza 66

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

जय नित्यनिरूपने जय सत्यसद्गुरुवे

जयभक्तररस अघहरने | मद्गुरुवे

जय एन्न मनद तवनिधिये || 66 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

जय नित्यनिरूपने जय सत्यसद्गुरुवे: नित्य और रूप-रहित (परम सत्य) प्रभु की जय हो! सत्य-स्वरूप सद्गुरु की जय हो!

जयभक्तररस अघहरने मद्गुरुवे: भक्तों के राजा, पापों का नाश करने वाले मेरे सद्गुरु की जय हो!

जय एन्न मनद तवनिधिये: मेरे मन की अक्षय निधि (खजाने) रूपी गुरुदेव की जय हो!

व्याख्या: यह मंगलाचरण और जयजयकार का पद है। अक्क महादेवी जी अपने सद्गुरु और परमात्मा की विजय-स्तुति करती हैं, जो उनके पापों का हरण करने वाले और उनके मन के एकमात्र अमूल्य खजाने हैं।

Stanza 67

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

गुरु चेन्नमल्लेश | वरकृपारसवेन्न

शरीरवनु तुंबि पोरसूसे | यदरिन्द

बरेदिहेनु बल्ल परियलि || 67 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

गुरु चेन्नमल्लेश वरकृपारसवेन्न: गुरु चेन्नमल्लिकार्जुन का वरदान-रूपी कृपा-रस...

शरीरवनु तुंबि पोरसूसे: ...जब मेरे पूरे शरीर में भरकर बाहर छलकने लगा...

यदरिन्द बरेदिहेनु बल्ल परियलि: ...उसी कृपा के प्रवाह में आकर मैंने अपनी समझ के अनुसार इस ग्रन्थ की रचना की है!

व्याख्या: यह ग्रन्थ-रचना का विनम्र समर्पण है। अक्क महादेवी जी स्पष्ट करती हैं कि 'योगांग त्रिविधि' की रचना उनके किसी व्यक्तिगत अहंकार या पाण्डित्य का परिणाम नहीं है, बल्कि चेन्नमल्लिकार्जुन का कृपा-रस जब उनके भीतर भर कर छलका, तो यह वाणी स्वतः बह निकली।

Stanza 68

Hindi Transliteration (देवनागरी लिप्यंतरण):

योगांगत्रिविधियनु | रागदिं बरेदोदे

रोगभवबाधे परियुवुदु | लिंगदोळु

सागि भवदिंद मेरेयुवरु || 68 ||

Detailed Hindi Meaning (विस्तृत हिन्दी अर्थ):

पंक्ति-दर-पंक्ति अर्थ:

योगांगत्रिविधियनु रागदिं बरेदोदे: जो भी इस 'योगांग त्रिविधि' ग्रन्थ को प्रेम और श्रद्धापूर्वक लिखेगा या पढ़ेगा...

रोगभवबाधे परियुवुदु: ...उसके सारे शारीरिक-मानसिक रोग और सांसारिक दुखों की पीड़ा मिट जाएगी...

लिंगदोळु सागि भवदिंद मेरेयुवरु: ...और वह लिंग (परमात्मा) में समाकर इस संसार से पार होकर परम पद को प्राप्त करेगा!

व्याख्या: यह ग्रन्थ की फलश्रुति (अंतिम आशीर्वाद) है। जो साधक इस 'योगांग त्रिविधि' का भक्ति-भाव से पठन या लेखन करता है, उसके सांसारिक कष्ट दूर होते हैं और वह अंततः शिव-सायुज्य (मोक्ष) को प्राप्त करता है।

